

वाह वाह बालक जी आ शोभा सुहाई

मिठी अमडि खे दियूं हर हर वाधाई ।

अति सुकुमार आ रूप जो भण्डार आ

सूरति मनोहर आ मनड़े खे भाई ॥

अनूपम बालक प्रघट्ट थियो आ वेदनि जंहि खे नेति चयो आ

दशरथ दुलारो थियो साकेत साई ॥

नीले बादल जियां कांति मनोहर कोट सूरज सम तेज आ रघुवर

कृपा गुरनि जी आ थी अजु सुहाई ॥

वाधाई वाधाई सभेई जीव गाइनि लालन दरस लाइ हर हर लीलाइन

द्रियण वाधाई अमां लक्ष्मी भी आई ॥

फूलियो फूलियो बाबा गुरनि सां अचे थो

गद् गद् थी गोद खणी लालनु नचे थो

कृपा गुरनि जी थे पल पल मनाई ॥

विप्रन दान देई आशीशूं वताई रघुवंश भाग जागियो हर्ष सां चयाई

कुखिड़ी कौशल्या तां कुरिबानु जाई ॥

कोकिल राणी बाणी बोले खाणि खुशियुनि जी घर घर खोले

जुग जुग जिए सिया रघुराई ॥